Sem. 4
MJ-7

हिन्दी की उपभाषाएँ तथा बोलियाँ

2011 की जनगणना के अनुसार भारतवर्ष की 121 करोड़ की जनसंख्या में 53 करोड़ हिन्दी भाषा भाषी हैं। पश्चिम में अम्बाला (हरियाणा) से लेकर पूर्व में पूर्णिया (बिहार) तक तथा उत्तर में बदरीनाथ (उत्तराखंड) से लेकर दक्षिण में खंडवा (मध्य-प्रदेश) तक के भौगोलिक क्षेत्र में हिन्दी भाषा बोली जाती है। इस हिन्दी भाषा-क्षेत्र में हिन्दी की कई उपभाषाएँ तथा बोलियाँ बोली जाती हैं। डॉ. ग्रियर्सन एवं डॉ. चटर्जी ने भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से हिन्दी की दो उपभाषाएँ स्वीकार की थीं — पश्चिमी हिन्दी एवं पूर्वी हिन्दी। किन्तु, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, डॉ. हरदेव बाहरी जैसे भाषा विद् अन्य तीन उपभाषाओं की भी गणना करते हैं — राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी। इन पाँचों उपभाषा-क्षेत्रों में इनकी अनेक बोलियाँ बोली जाती हैं, जो इस प्रकार हैं —

(1) पश्चिमी हिन्दी उपभाषा → इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। इसका क्षेत्र वस्तुतः प्राचीन मध्यदेश है, जो आज उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग से लेकर पूर्वी राजस्थान, ग्वालियर, बुन्देलखण्ड क्षेत्रों तक विस्तृत है। इसकी बोलियाँ हैं —

(i) खड़ी बोली — यह भाषा दिल्ली, मेरठ, मुरादाबाद, देहरादून आदि क्षेत्रों में बोली जाती है; किन्तु, इस भाषा को उन्नीसवीं सदी में साहित्यिक प्रतिष्ठा मिलने तथा स्वतंत्र भारत में संघ की राजभाषा घोषित किए जाने के बाद अखिल भारतीय स्वरूप प्राप्त हो चुका है। इसी भाषा के आधार पर आधुनिक हिन्दी और उर्दू का रूप खड़ा है।

(ii) बांगरू (हरियाणवी) — यह भाषा करनाल, रोहतक तथा दिल्ली जिलों में बोली जाती है। कुछ विद्वान मानते हैं कि बांगरू खड़ी बोली का ही एक रूप है जिसमें पंजाबी और राजस्थानी का मिश्रण है। खड़ी बोली से इसका ध्वनिगत तथा व्याकरणगत अन्तर अत्यंत सूक्ष्म है।

(iii) ब्रजभाषा — यह मुख्य रूप से मथुरा-आगरा क्षेत्र की भाषा है। मध्यकाल में इसी भाषा में उच्चकोटि का साहित्य-लेखन किया गया। उस समय यह सम्पूर्ण हिन्दी प्रदेश की साहित्यिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित थी।

(iv) कन्नौजी — यह इटावा, फर्रुखाबाद एवं शाहजहाँपुर की भाषा है इस भाषा-क्षेत्र के एक ओर ब्रजभाषा तथा दूसरी ओर अवधी भाषा का क्षेत्र है। यह ब्रजभाषा से मिलती-जुलती भाषा है।

(v) बुंदेली — यह प्रधानतः बुन्देलखण्ड की भाषा है। इस भाषा में साहित्य-रचना अल्प है। शायद आदिकालीन रचना 'आल्हखंड' बुन्देली भाषा में ही मूलतः रचा गया था।

(2) पूर्वी हिन्दी — इस भाषा-समूह का विकास अर्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है। इसके अंतर्गत बोलियाँ हैं —

(i) अवधी — यह इस भाषा-समूह की मुख्य बोली है, जिसमें गो० तुलसीदास रचित 'रामचरितमानस' इसे महत्वपूर्ण बनाता है। जायसी का 'पदमावत' भी इसी भाषा की रचना है। इसे बैसवाड़ी भी कहा जाता है।

(ii) बघेली — यह बघेलखंड-रीवाँ की भाषा है। यह अवधी भाषा का ही एक दक्षिणी रूप है।

(iii) छत्तीसगढ़ी — यह भाषा छत्तीसगढ़ के रायपुर और बिलासपुर जिले में बोली जाती है। इस भाषा को लरिया या खल्लाही भी कहते हैं।

(3) राजस्थानी हिन्दी — ~~यह~~ इस भाषा समूह पर शौरसेनी अपभ्रंश का स्पष्ट प्रभाव है। यह मुख्यतः राजस्थान प्रदेश की भाषा है। इसकी बोलियाँ हैं —

(i) मारवाड़ी — यह पश्चिमी राजस्थानी भाषा है, जो जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर एवं उदयपुर क्षेत्रों में बोली जाती है।

(ii) ढूंढाड़ी — इसे जयपुरी भी कहते हैं। अजमेरी, हाड़ौती बोलियाँ भी इसके अन्तर्गत है। यह जयपुर, कोटा, बूँदी क्षेत्रों में बोली जाती है।

(iii) मेवाती — यह उत्तरी राजस्थानी भाषा है। इसी क्षेत्र में अहीरवाटी बोली भी है।

(iv) मालवी — इसका क्षेत्र ~~है~~ दक्षिणी राजस्थान है और इसका केन्द्र इन्दौर क्षेत्र है।

(4) बिहारी हिन्दी — डॉ० ग्रियर्सन द्वारा यह नाम दिया गया है तथा इस ~~भाषा~~-समूह का विकास मागधी अपभ्रंश से हुआ है। यह पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार-झारखण्ड की भाषा है। इसकी बोलियाँ ~~डॉ~~ डॉ० ग्रियर्सन ने मैथिली, मगही, भोजपुरी स्वीकारा है, किन्तु मैथिली को संविधान की अष्टम अनुसूची में स्थान प्राप्ति के बाद इसे स्वतंत्र भाषा मान ली गयी है। इसकी बोलियाँ हैं —

(ii) भोजपुरी – यह पूर्वी उत्तरप्रदेश तथा बिहार के भोजपुर, सारण क्षेत्रों की भाषा है।
(iii) मगही – यह दक्षिणी बिहार के मगध क्षेत्र की बोली है।
(iii) नागपुरी – यह झारखण्ड प्रदेश के छोटानागपुर भाग की बोली है।

(5) पहाड़ी हिन्दी – यह नामकरण भी डॉ. ग्रियर्सन का किया हुआ है। इसका क्षेत्र उत्तराखण्ड एवं हिमाचलप्रदेश का है। इस उपभाषा के अन्तर्गत दो मुख्य बोलियाँ – गढ़वाली और कुमाऊँनी तथा पहाड़ी हैं।

उपर्युक्त बोलियों के विवरण से स्पष्ट है कि हिन्दी की पाँच उपभाषाओं के साथ अठारह विभिन्न क्षेत्रों की प्रमुख बोलियाँ हैं। विभिन्न बोलियाँ राजनीतिक-सांस्कृतिक - साहित्यिक आधार पर अपना स्थान उच्च कर विभाषा और भाषा स्तर पर पहुँचती हैं। आज ब्रजभाषा, अवधी, खड़ीबोली, भोजपुरी व मैथिली जैसी बोलियाँ विभाषा का स्थान प्राप्त कर चुकी हैं। इनमें भी खड़ीबोली और मैथिली भाषा के रूप में सम्मानित हैं।